Pyare Nabi Ki Pyari Aal (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 361
Weekly Booklet : 361

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात का तहरीरी गुल्दस्ता बनाम

प्यारे नबी की प्यारी आल

सफ़हात 22

प्यारे आक़ा की प्यारी शहज़ादियां 02
तस्वीरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 06
सब से बड़े नवासए रसूल 07
ख़ातूने जन्नत की सब से छोटी शहज़ादी 19

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**प्यारे नबी की प्यारी आल**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

प्यारे नबी की प्यारी आल[1]

दुआए अत्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : **"प्यारे नबी की प्यारी आल"** पढ़ या सुन ले उसे क़ियामत के दिन सादाते किराम के नानाजान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत नसीब फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला दे कर अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना । اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى الله عليه واٰله وسلّم

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौला अ़ली को नसीहत

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِيَ اللهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : يَا عَلِيُّ! اِحْفَظْ عَنِّيْ خَصْلَتَيْنِ أَتَانِيْ بِهِمَا جِبْرِيْلُ عَلَيْهِ السَّلَام أَكْثِرِ الصَّلَاةَ عَلَيَّ بِالسَّحَرِ، وَالْاِسْتِغْفَارَ بِالْمَغْرِبِ۔ **तरजमा :** ऐ अ़ली ! मुझ से दो आ़दतें याद कर लो जिन्हें जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास लाए : ﴿1﴾ सहर के वक़्त मुझ पर बहुत ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ा करो और ﴿2﴾ मग़रिब के वक़्त बहुत ज़ियादा इस्तिग़फ़ार किया करो । (القربة الى رب العلمين، ص90)

नामे हज़रत पे लाख बार दुरूद — बे अ़दद और बे शुमार दुरूद
जो मुहिब्बे नबी है ऐ काफ़ी — चाहिये उस को बार बार दुरूद

(दीवाने काफ़ी, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

---

1 ... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुहर्रम शरीफ़ 1444 हिजरी के पहले अ़शरे में होने वाले मदनी मुज़ाकरों से पहले रोज़ाना शाने अहले बैते अत्हार पर मुख़्तसर बयान फ़रमाते थे, उन में से तीन बयानात को जम्अ़ कर के येह रिसाला तय्यार किया गया है ।

प्यारे आक़ा की प्यारी शहज़ादियां

ऐ आशिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! हमारे यहां आम तौ़र पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक शहज़ादी, शहज़ादिये कौनैन सय्यिदह फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا का ज़िक्रे ख़ैर होता है, बिल्कुल होना चाहिये क्यूं कि आप **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाडली शहज़ादी हैं, मगर तीन और शहज़ादियां भी हैं जो अहले बैत में से हैं और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सगी बेटियां हैं, उन के मुबारक नाम येह हैं : ह़ज़रते बीबी ज़ैनब, ह़ज़रते बीबी रुक़य्या और ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُنَّ । **अल्लाह** करे ! इन सब शहज़ादियों के नाम हमें ज़बानी याद हो जाएं, आइये ! अब इन चारों शहज़ादियों का मुख़्तसर तआ़रुफ़ पेश करने की कोशिश करता हूं :

पहली शहज़ादी

मेरे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا हैं (जो बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا करबला में थीं वोह इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की बहन थीं और येह प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हैं) । ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا को मक्कए पाक से मदीनए पाक हिजरत में बड़ी आज़्माइश पेश आई, जिस की वज्ह से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के बारे में इर्शाद फ़रमाया : هِیَ اَفْضَلُ بَنَاتِیْ اُصِیْبَتْ فِیَّ या'नी येह मेरी बेटियों में (इस ए'तिबार से) ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली हैं कि मेरी जानिब हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई ।

(شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/318۔ مستدرک، 2/565، حدیث:2866)

ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की जब वफ़ात शरीफ़ हुई तो **अल्लाह** के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के कफ़न के लिये अपना

तहबन्द शरीफ़ अ़ता फ़रमाया और अपने बा बरकत हाथों से इन्हें क़ब्र में उतारा। (شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/318۔ بخاری، 1/425، حدیث:1253)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दूसरी शहज़ादी

ए'लाने नुबुव्वत से सात साल पहले, जब **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ 33 साल (Thirty three years) थी उस वक़्त बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا पैदा हुईं। आप मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा (wife) हैं। (مواہب اللدنیہ، 1/392، 393 ملتقطاً)

ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا सख़्त बीमार थीं जिस वज्ह से **अल्लाह** के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उन की तीमार दारी के लिये उन के पास रुकने का फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रुक गए। चूंकि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मालिकुल अह़काम भी हैं लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को ग़ज़्वए बद्र के शुरका के बराबर सवाब की ख़ुश ख़बरी सुनाई और माले ग़नीमत भी इ़नायत फ़रमाया। जब मुसल्मानों की फ़त्ह़ की ख़बर मदीनए मुनव्वरह पहुंची उसी दिन ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की वफ़ात शरीफ़ हुई।

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी शहज़ादी ह़ज़रते रुक़य्या (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) जब वफ़ात पा गईं तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बहुत रोए, हुज़ूरे अकरम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने

पूछा : उ़स्मान क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह !** मैं हुज़ूर की दामादी से महरूम हो गया हूं। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुझ से जिब्रीले अमीन ने अ़र्ज़ किया है कि **अल्लाह** पाक का हुक्म है कि मैं अपनी दूसरी साहिब ज़ादी "उम्मे कुल्सूम" का निकाह़ तुम से कर दूं बशर्ते कि वोही महर हो जो रुक़य्या का था और तुम इस से वोही सुलूक करो जो रुक़य्या से किया। चुनान्चे ह़ज़रते उम्मे कुल्सूम (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) का निकाह़ ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه से कर दिया गया। दुन्या में ऐसा कोई नहीं जिस के निकाह़ में नबी की दो बेटियां आई हों। येह ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه की ख़ुसूसिय्यत थी और इसी वज्ह से आप को ज़ुन्नूरैन (या'नी दो नूर वाले) का लक़ब मिला। (مرقاۃ، 10/445، تحت الحدیث:6080, मिरआतुल मनाजीह, 8/405) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

नूर की सरकार से पाया दोशाला नूर का हो मुबारक तुम को ज़ुन्नूरैन जोड़ा नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 246)

या'नी ऐ दो नूर वाले प्यारे उ़स्माने ग़नी ! आप को बहुत बहुत मुबारक हो कि आप ने नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से नूर की दो चादरें (या'नी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दो साहिब ज़ादियां अपने निकाह़ में) लेने का शरफ़ ह़ासिल किया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

तीसरी शहज़ादी

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी उ़म्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ عَنْهَا हैं। आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا कुन्यत के साथ ही मश्हूर हैं। ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने

शा'बान 9 हि. में वफ़ात पाई और **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। (شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/325،327 ملتقطا) और आप का जन्नतुल बक़ीअ़ में मज़ार शरीफ़ बना।

चौथी शहज़ादी

हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा प्यारी और लाडली शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हैं। आप का नाम मुबारक "फ़ातिमा" जब कि "ज़हरा" और "बतूल" आप के अल्क़ाबात हैं। ह़दीसे पाक में है : इस (या'नी मेरी बेटी) का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा गया है क्यूं कि **अल्लाह** पाक ने इस को और इस के मुहि़ब्बीन को दोज़ख़ से आज़ाद किया है।

(सीरते मुस्त़फ़ा, स. 697, کنز العمال، جز:12، 6/50، حدیث:34222)

सय्यिदह ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के मुबारक बदन से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी जिसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूंघा करते थे। इस लिये आप का लक़ब "ज़हरा" हुवा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 8/453, المبسوط للسرخسی، 10/155)

बतूलो फ़ातिमा, ज़हरा लक़ब इस वासिते पाया   कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत का

(दीवाने सालिक, स. 90)

अल्लाह के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "فَاطِمَۃُ بِضْعَۃٌ مِّنِّیْ فَمَنْ اَغْضَبَہَا اَغْضَبَنِیْ" या'नी फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) मेरा टुकड़ा है, जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया।" एक और रिवायत में है : "يُرِيْبُنِیْ مَا اَرَابَہَا وَيُؤْذِيْنِیْ مَا اٰذَاہَا" या'नी जो चीज़ इन्हें परेशान करे वोह मुझे परेशान करती है और जो इन्हें तक्लीफ़ दे वोह मुझे सताता है।"

(مسلم، ص1021، حدیث:6307)

सय्यिदह, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 309)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

तस्वीरे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान हज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा, तय्यिबा, ताहिरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने चालढाल, शक्लो सूरत और बातचीत में बीबी फ़ातिमा से बढ़ कर किसी को हुज़ूरे अकरम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मुशाबेह या'नी मिलती जुलती नहीं देखा और जब हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर होतीं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो जाते, उन के हाथ को पकड़ कर बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते और जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बीबी फ़ातिमा के पास तशरीफ़ ले जाते तो वोह (भी) हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के लिये खड़ी हो जातीं और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथ को थाम कर चूमतीं और अपनी जगह बिठातीं । (ابوداؤد، 4/454، حدیث:5217) **अल्लाह पाक इन चारों शहज़ादियों के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमाए । आमीन**

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा किया नज़्ज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

(दीवाने सालिक, स. 90)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे नवासे और नवासियां

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कई

नवासे और नवासियां थीं मगर सब से ज़ियादा मश्हूर ह़सनैने करीमैन (या'नी इमामे ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) हैं। ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के इस इर्शाद "عِنْدَ ذِکْرِ الصَّالِحِیْنَ تَنْزِلُ الرَّحْمَۃُ" या'नी नेकों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है" (حلیۃ الاولیاء، 7/335، رقم:10750) के मुत़ाबिक़ रब्बे करीम की रह़मतों के ह़ुसूल और अपनी मा'लूमात में इज़ाफ़े के लिये प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे और नवासियों का तज़्किरा पढ़िये :

सब से बड़े नवासए रसूल

हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की एक बेटी और एक बेटा था। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस नवासे का नाम "अ़ली" था। एक रिवायत में है कि येह अपनी अम्मीजान की ह़यात (या'नी मुबारक ज़िन्दगी) ही में बुलूग़ के क़रीब (या'नी बालिग़ होने के क़रीब) इन्तिक़ाल फ़रमा गए लेकिन इब्ने अ़साकिर का बयान है कि नसब नामों के बयान करने वाले बा'ज़ उ़लमा ने येह ज़िक्र किया है कि येह जंगे यरमूक में शहीद हुए।

(طبقات الکبریٰ، 8/25، شرح الزرقانی، 4/321, सीरते मुस्त़फ़ा, स. 693)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

सब से बड़ी नवासी

ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की बेटी का नाम "उमामा" था, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी सब से बड़ी नवासी ह़ज़रते बीबी उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से बड़ी मह़ब्बत थी। आप इन को अपने दोश (या'नी मुबारक

कन्धों, Shoulders) पर बिठा कर मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले जाते थे। रिवायत में है : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अज़्मत में एक मरतबा ह़बशा शरीफ़ के बादशाह नजाशी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बतौरे हदिय्या (Gift) एक हुल्ला भेजा जिस के साथ सोने की एक अंगूठी भी थी, उस का नगीना ह़बशी था। **अल्लाह** के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने येह अंगूठी ह़ज़रते बीबी उमामा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا को इनायत फ़रमाई।

(सीरते मुस्त़फ़ा, स. 693, ابن ماجہ، ص177، حدیث:3644)

सोने का ख़ूब सूरत हार

इसी त़रह़ एक मरतबा किसी ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم को एक बहुत ही ख़ूब सूरत सोने का हार तोह़फ़े में पेश किया, जिस की ख़ूब सूरती देख कर तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात[1] رَضِىَ اللهُ عَنْهُنَّ हैरान रह गईं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने अपनी पाकीज़ा बीवियों से फ़रमाया कि मैं येह हार उस को दूंगा जो मेरे घर वालों में मुझे सब से ज़ियादा प्यारी है। तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِىَ اللهُ عَنْهُنَّ ने येह ख़याल कर लिया कि यक़ीनन येह हार अब ह़ज़रते बीबी आइशा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا को अ़त़ा फ़रमाएंगे मगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बीबी उमामा رَضِىَ اللهُ عَنْهَا को क़रीब बुलाया और अपनी प्यारी नवासी के गले में अपने मुबारक हाथ से येह हार डाल दिया।

(شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/321۔ مسند امام احمد، 9/399، حدیث:24758)

---

1 ... "अज़्वाज" लफ़्ज़े ज़ौजा की जम्अ़ है या'नी बीवी। "मुत़ह्हरात" लफ़्ज़े मुत़ह्हरा की जम्अ़ या'नी पाकीज़ा, मा'ना येह हुए कि प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा बीवियां, पाक बीबियां, (Holy Wifes)। नीज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात को "उम्महातुल मुअमिनीन" भी कहा जाता है, "उम्महात" लफ़्ज़े उम्म की जम्अ़ है जिस का मा'ना है "मां" लिहाज़ा उम्महातुल मुअमिनीन के मा'ना हुए "मोमिनों की माएं।"

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत की वसिय्यतें

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अपनी वफ़ात से पहले मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को दो वसिय्यतें कीं : ﴾1﴿ मेरी वफ़ात के बा'द मेरी भान्जी उमामा से निकाह़ करना । (معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، 192/5) ﴾2﴿ मैं जब दुन्या से जाऊं तो मुझे रात में दफ़्न करें ताकि मेरे जनाज़े पर ना मह़रम की नज़र न पड़े । (फ़तावा रज़विय्या, 9/307, तोह़्फ़ए इस्ना अ़शरिया, स. 281)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

سُبْحٰنَ اللہ ! सय्यिदह ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पर्दे की भी क्या बात है ! आप कैसी पर्दा नशीन थीं, किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

چُو زَہرا باش اَز مخلوق رُوپوش   کہ دَر آغوش شبّیرے بہ بینی

(या'नी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की त़रह़ परहेज़ गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते सय्यिदुना शब्बीरे नामदार इमामे हुसैन, शहीदे करबला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जैसी औलाद देखो ।)

या'नी औ़रतों को चोट की गई है कि पर्दा किया करो... और परहेज़ गार बनो... आवारा गलियों में न फिरो... शोपिंग सेन्टरों की ज़ीनत न बनो... शादियों में बन ठन कर नुमाइशी बन कर मत जाओ... बल्कि तक़्वा इख़्तियार करो... पर्दा नशीन बनो ताकि तुम अपनी गोद में इमामे हुसैन का

फ़ैज़ देखो और नेक औलाद पाओ... अब जिस त़रह़ औ़रतों का ह़ाल है اَسْتَغْفِرُ اللّٰه... बहुत बुरी ह़ालत है... फिर औलाद भी जो सर चढ़ कर बोलती है वोह भी दुन्या देख रही है, **अल्लाह** पाक हमारे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाए... **अल्लाह** करे कि हमारा मुआ़शरा सह़ीह़ हो जाए। आमीन

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नवासए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दूसरी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी, ज़ुन्नूरैन, जामेउ़ल क़ुरआन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के एक शहज़ादे भी पैदा हुए थे जिन का नाम "अ़ब्दुल्लाह" था। येह अपनी अम्मीजान के बा'द 4 हिजरी में छे साल की उ़म्र पा कर वफ़ात पा गए। (شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/323)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तीसरी शहज़ादी ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से निकाह़ हुवा मगर इन से कोई औलाद न हुई।

(شرح الزرقانی علی المواہب اللدنیہ، 4/327)

जिन इस्लामी बहनों के हां औलाद नहीं हुई इस में उन के लिये दर्स है कि अगर औलाद नहीं हुई तो बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को याद कर लें कि औलाद तो इन के हां भी नहीं हुई मगर इन्हों ने तो यक़ीनन सब्र किया था, इन का घराना तो साबिरों का घराना है, इन के यहां सब्र ऐसा था कि सारी काएनात में इस घराने से सब्र तक़्सीम हुवा है, **अल्लाह** हमें भी इन

के सब्र के सदक़े में सब्र की दोलत नसीब फ़रमाए ताकि हमारे गिले शिक्वे सब दम तोड़ जाएं।

ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की औलादे पाक

प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, ख़ातमुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से छोटी और लाडली शहज़ादी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के तीन शहज़ादे : ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ, ﴿2﴾ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और ﴿3﴾ ह़ज़रते मुह़स्सिन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और तीन शहज़ादियां : ﴿1﴾ ह़ज़रते सय्यिदह बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا, ﴿2﴾ ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और ﴿3﴾ ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا थीं।

(शाने ख़ातूने जन्नत, स. 256 ता 263 मुलख़्ख़सन, इज्माल तरजमए अकमाल, स. 72)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़स्सिन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ और शहज़ादी ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का इन्तिक़ाल शरीफ़ तो बचपन ही में हो गया था इस लिये तारीख़ व सीरत की किताबों में इन का तज़्किरा शरीफ़ कम मिलता है।

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नस्ले मुबारक जिन मुबारक साह़िबान से चली उन ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन के चन्द फ़ज़ाइल पढ़िये :

दो जन्नती फूल

﴿1﴾ **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) दुन्या में मेरे दो फूल हैं।"

(بخاری، 2/547، حدیث:3753)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़रमाने नबवी का मत़लब येह है कि ह़ज़रते ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) दुन्या में जन्नत के फूल हैं जो मुझे अ़त़ा हुए, इन के जिस्म से जन्नत की ख़ुश्बू आती है इस लिये ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) इन्हें सूंघा करते थे और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللهُ عَنْه) से फ़रमाते थे : ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَبَا رَيْحَانَيْنِ'' या'नी ऐ दो फूलों के वालिद ! तुम पर सलाम हो। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/462)

एक और ह़दीसे पाक के तह़्त मुफ़्ती साह़िब लिखते हैं : जैसे बाग़ वाले को सारे बाग़ में फूल प्यारा होता है ऐसे ही दुन्या और दुन्या की तमाम चीज़ों में मुझे ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) प्यारे हैं। औलाद फूल ही कहलाती है, सारे नवासी नवासों में ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह दोनों फ़रज़न्द (या'नी बेटे नवासे) बहुत प्यारे थे। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/475)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

उन दो का सदक़ा जिन को कहा मेरे फूल हैं कीजे रज़ा को ह़श्र में ख़न्दां मिसाले गुल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 77)

शर्ह़े कलामे रज़ा : ऐ मेरे आक़ा ! अपने जिन दो शहज़ादों (ह़सन व ह़ुसैन) को आप ने अपना फूल फ़रमाया है, उन का सदक़ा बरोज़े क़ियामत अह़मद रज़ा को सारे ग़मों से नजात दिला कर फूल की सी मुस्कुराहट अ़त़ा फ़रमा दीजिये।

काश ! येह अ़र्ज़ हमारे ह़क़ में भी क़बूल हो जाए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह मेरे दोनों बेटे मेरी बेटी के बेटे हैं, इलाही ! मैं इन दोनों से मह़ब्बत करता हूं, तू भी इन से

महब्बत फ़रमा और जो इन से महब्बत करे उस से भी महब्बत फ़रमा।

(ترمذی، 5/427، حدیث:3794)

या अल्लाह पाक! हम तेरे महबूब के इन दोनों नवासों "हसन व हुसैन" से महब्बत करते हैं तू भी हम से महब्बत फ़रमा और हमें इन की महब्बत में सच्चा कर दे।

इस हदीसे पाक के तहत "मिरआतुल मनाजीह" में है: या'नी येह हुक्मन मेरे बेटे हैं और हक़ीक़तन मेरी बेटी के बेटे हैं, मुझे इन से बेटों जैसी महब्बत है। ख़याल रहे कि हज़रते (बीबी) फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की येह ख़ुसूसिय्यत है कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا) की औलाद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नस्ल है, इस से हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नस्ल चली, गोया हसन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا) हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नस्ल भी हैं और नस्ल की अस्ल भी वरना नसब बाप से होता है न कि मां से, हां! शरफ़ (या'नी फ़ज़ीलत व फ़ख़्र) मां से भी हो जाता है। लफ़्ज़े आल दोनों पर बोला जाता है, बेटे की औलाद पर भी और बेटी की औलाद पर भी। (मिरआतुल मनाजीह, 8/476)

है रुत्बा इस लिये कौनैन में इस्मत का इफ़्फ़त का शरफ़ हासिल है इन को दामने ज़हरा से निस्बत का
इन्ही के माहपारे दो जहां के ताज वाले हैं येह ही हैं मज्मए बहरैन सरचश्मा हिदायत का

(दीवाने सालिक, स. 89)

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ हदीसे पाक के इस हिस्से "इलाही! मैं इन दोनों से महब्बत करता हूं, तू भी इन से महब्बत फ़रमा और जो इन से महब्बत करे उस से भी महब्बत फ़रमा" की शर्ह करते हुए फ़रमाते हैं: इस दुआ का मक़्सूद (वहां मौजूद) हज़रते सय्यिदुना उसामा

(رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) को सुनाना और बताना है कि उसामा मेरे ह़सन व हुसैन से मह़ब्बत करो कि इन की मह़ब्बत **अल्लाह** पाक की मह़बूबिय्यत (या'नी प्यारा होने) का ज़रीआ़ है। ख़याल रहे कि दिली मह़ब्बत बिजली के करन्ट की त़रह़ एक मुतअ़द्दी (या'नी फैलने वाली) चीज़ है, जिस से मह़ब्बत होती है उस की औलाद, घर वाले, नोकरों चाकरों ह़त्ता कि उस के शह़र से मह़ब्बत हो जाती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/476)

सय्यिदह ज़ाहिरा त़य्यिबा त़ाहिरा जाने अह़मद की राह़त पे लाखों सलाम
ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम
उस शहीदे बला शाहे गुलगूं क़बा बे कसे दश्ते ग़ुर्बत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 309, 310)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴿3﴾ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : اَلْحَسَنُ وَالْحُسَیْنُ سَیِّدَا شَبَابِ اَھْلِ الْجَنَّۃِ या'नी ह़सन व हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(ترمذی، 5/426، حدیث:3793)

ह़सनैने करीमैन की नाज़ बरदारियां

सह़ाबिये रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि एक रोज़ हम प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे नमाज़े इ़शा अदा कर रहे थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब सज्दा किया तो इमामे ह़सन और इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا आप की पुश्ते मुबारक या'नी पीठ शरीफ़ पर सुवार हो गए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दे से सर उठाया तो इन को नरमी से पकड़ कर ज़मीन पर बिठा दिया, दोबारा सज्दा किया तो दोनों शहज़ादों

ने फिर ऐसे ही किया यहां तक कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पूरी की, फिर इन दोनों को अपनी मुक़द्दस रानों पर बिठा लिया।

(مسند امام احمد، 3/592، حدیث:10664)

अ़त्तार को बुला के मदीने में दो बक़ीअ़
"दो फूलों" के तुफ़ैल हों पूरे सुवाल दो

शर्हे कलामे अ़त्तार : यहां दो सुवालों का ज़िक्र है कि **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अ़त्तार को मदीने बुला लीजिये और बुला के फिर जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न अ़ता फ़रमा दीजिये तो यूं "दो फूलों" के तुफ़ैल हों पूरे सुवाल दो, इन दो फूलों का सदक़ा मेरे दो सुवाल पूरे कर दीजिये, मदीने भी बुला लीजिये और बुला के अपने पास बक़ीअ़ में भी रख लीजिये।

﴾4﴿ बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया गया कि अहले बैत में आप को ज़ियादा प्यारा कौन है ? फ़रमाया : ह़सन और ह़ुसैन। और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (ह़ज़रते बीबी) फ़ातिमा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) से फ़रमाते थे कि मेरे पास मेरे बच्चों को बुलाओ। फिर उन्हें सूंघते थे और अपने से लिपटाते थे।

(ترمذی، 5/428، حدیث:3793)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अल्लाह के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उन्हें क्यूं न सूंघते वोह दोनों तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के फूल थे, फूल सूंघे ही जाते हैं, उन्हें कलेजे (या'नी सीने) से लगाना लिपटाना इन्तिहाई मह़ब्बत व प्यार के लिये था। इस से मा'लूम हुवा कि छोटे बच्चों को सूंघना, उन से प्यार करना, उन्हें लिपटाना चिमटाना सुन्नते **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/478)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने करीम के बा'द सब से ज़ियादा क़ाबिले ए'तिमाद अहादीसे मुबारका की कुतुब "सिहाह़ सित्ता" या'नी छे सहीह़ कुतुब कहलाती हैं, जिन में से एक किताब "तिरमिज़ी शरीफ़" भी है, इस में है कि वलियों के शहन्शाह ह़ज़रते मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : ह़सन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की शक्ल मुबारक सर से सीने तक हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से मुशाबेह (या'नी मिलती जुलती) है और हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की सीने से नाख़ुने पा (या'नी पाउं मुबारक के नाख़ुन) तक। (ترمذی، 5/430، حدیث:3804)

इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत, अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस ज़िम्न में बहुत ही प्यारी रुबाई लिखी है, चुनान्चे आप फ़रमाते हैं :

मा'दूम न था सायए शाहे सक़लैन — उस नूर की जल्वा गह थी ज़ाते ह़सनैन
तम्सील ने उस साए के दो ह़िस्से किये — आधे से ह़सन बने हैं आधे से ह़ुसैन

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 444)

शे'र की वज़ाह़त : यूं तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक साया सूरज की धूप और चांद की रोशनी में ज़मीन पर न पड़ता था मगर जब आप के फ़ैज़ान का साया ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا पर पड़ा तो सरे अन्वर से सीनए मुबारका तक इमामे ह़सन और वहां से क़दमैने शरीफ़ैन तक इमामे ह़ुसैन मुशाबेह हो गए।

क़सीदए नूर में इमामे अहले सुन्नत लिखते हैं) :

एक सीने तक मुशाबेह इक वहां से पाउं तक
ह़ुस्ने सिब्ते़न इन के जामों में है नीमा नूर का

साफ़ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से इयां

ख़त्ते तौअम में लिखा है येह दो वरक़ा नूर का

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 249)

शर्हे कलामे रज़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सर से ले कर सीने तक जब कि शहीदे करबला ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सीने से पाउं तक अपने नानाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबेह थे। जिस त़रह़ ख़त्ते तौअम[2] के दोनों टुकड़ों को मिलाने से ख़त़ का मज़्मून सामने आ जाता है इसी त़रह़ ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की एक साथ ज़ियारत करने से सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नूरानी सरापा नज़र आता था।

आ'ला ह़ज़रत, वाक़ेई आ'ला ह़ज़रत थे, जब क़लम उठाते थे तो दरिया बहा देते थे, ऐसे अल्फ़ाज़ लाते कि शायद लुग़त के येह अल्फ़ाज़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से मिन्नतें करते होंगे, हाथ जोड़ते होंगे कि कहीं हमें भी अपने अश्आ़र में जगह दीजिये ना, आप का क्या जाएगा, हमारी ईद हो जाएगी और आक़ा के सना ख़्वां हमें अपनी ज़बान से अदा करते रहेंगे।

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि ह़ज़रते (बीबी) फ़ातिमा ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا) अज़ सर ता क़दम या'नी सरे मुबारक से ले कर क़दम मुबारक तक बिल्कुल हम शक्ले मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) थीं और आप के साह़िब ज़ादगान (या'नी बेटों) में येह मुशाबहत तक़्सीम कर दी गई थी। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/480)

2... ख़त्ते तौअम : उस ख़त़ को कहते हैं जिस में एक काग़ज़ के दो टुकड़े कर के ख़त़ के मज़्मून को उन दोनों टुकड़ों में इस त़रह़ तक़्सीम कर दिया जाता है कि दोनों को मिलाए बिग़ैर मज़्मून की समझ न आ सके। (फ़न्ने शाइरी और ह़स्सानुल हिन्द, स. 178 मफ़्हूमन)

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा किया नज़्ज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

(दीवाने सालिक, स. 90)

अच्छों की मुशाबहत

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से क़ुदरती मुशाबहत तो बेशक **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी ने'मत है, जो अपने किसी अ़मल को हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुशाबेह कर दे तो उस की बख़्शिश हो जाती है तो जिसे ख़ुदाए पाक अपने मह़बूब (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुशाबेह करे या'नी मिलता जुलता कर दे उस की मह़बूबिय्यत का क्या आ़लम होगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/480)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

﴾5﴿ प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) से जिस ने मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने इन से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की। (مستدرک، 4/156، حدیث:4830)

या अल्लाह पाक ! हम ह़सनैने करीमैन से, इन की अम्मीजान बीबी फ़ात़िमा, इन के बाबाजान ह़ज़रते अ़ली से और तमाम सह़ाबा व अहले बैत से मह़ब्बत करते हैं, **या अल्लाह** पाक ! हम इन सब के आक़ा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से और इन तमाम को पैदा करने वाले रब्बे करीम ! तुझ से मह़ब्बत करते हैं।

ख़ातूने जन्नत की सब से बड़ी शहज़ादी

ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की बड़ी शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदह बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की कुन्यत "उम्मुल ह़सन" थी और

वाक़िअ़ए करबला के बा'द इन की कुन्यत "उम्मुल मसाइब" मश्हूर हो गई थी। (शाने ख़ातूने जन्नत, स. 261) इन्हों ने बहुत मुसीबतें बरदाश्त कीं, बहुत सब्र किया और मुश्किलात का डट कर मुक़ाबला किया, येह ऐसी साबिरा थीं कि इन के अपने छोटे छोटे शहज़ादे मुह़म्मद और औ़न رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने भी करबला के मैदान में तल्वार पकड़ी और यज़ीदियों के मुक़ाबले में निकल गए, आख़िरे कार जामे शहादत नोश कर लिया, करबला में इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के भाई, भतीजे, भान्जे और बेटे भी राहे ख़ुदा में क़ुरबान हुए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने अपनी लख़्ते जिगर ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से किया। (اسد الغابہ، 7/146)

ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मुबारक वसीले से "**वसाइले बख़्शिश**" में यूं अ़र्ज़ किया गया है :

बहरे ज़ैनब बे ह़याई का हुज़ूर ख़ातिमा हो ख़ातिमा फ़रियाद है

(वसाइले बख़्शिश, स. 587)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत की सब से छोटी शहज़ादी

ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की सब से छोटी साह़िब ज़ादी ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا अपनी बड़ी बहन ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मुशाबेह (या'नी शक्लो सूरत में मिलती जुलती) थीं। मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने ह़ज़रते बीबी उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से निकाह़ फ़रमाया । आप ने मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ को निकाह़ का पैग़ाम भेजा और कहा : ऐ अ़ली ! आप अपनी शहज़ादी का निकाह़ मुझ से कर दीजिये क्यूं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है कि "कल बरोज़े क़ियामत हर नसब और रिश्ता मुन्क़तेअ़ (या'नी ख़त्म) हो जाएगा सिवाए मेरे नसब और मेरे रिश्ते के ।" तो येह फ़ज़ीलत पाने के लिये सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने मौला अ़ली की शहज़ादी बीबी उम्मे कुल्सूम से निकाह़ किया और ह़क़ महर में 40,000 दिरहम दिये ।

(مجمع الزوائد، 8/398، حدیث:13827۔ الحدیث المختارہ، 1/198، حدیث:102۔ الاستیعاب، 4/509، الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، 8/465, फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म, 1/79)

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और अहले बैते अत़्हार की आपस में बड़ी मह़ब्बतें और ख़ानदानी रिश्ते थे । **अल्लाह** पाक हमें इन की बरकतें नसीब फ़रमाए ।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

सह़ाबा और अहले बैत की दिल में मह़ब्बत है ब फ़ैज़ाने रज़ा मैं हूं गदा फ़ारूक़े आ'ज़म का

(वसाइले बख़्शिश, स. 526)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

मज़मून	सफ़हा नम्बर
नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौला अ़ली को नसीह़त	1
प्यारे आक़ा की प्यारी शहज़ादियां	2
पहली शहज़ादी	2
दूसरी शहज़ादी	3
तीसरी शहज़ादी	4
चौथी शहज़ादी	5
तस्वीरे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	6
प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे नवासे और नवासियां	6
सब से बड़े नवासए रसूल	7
सब से बड़ी नवासी	7
सोने का ख़ूब सूरत हार	8
ख़ातूने जन्नत की वसिय्यतें	9
नवासए रसूल ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه	10
ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की औलादे पाक	11
दो जन्नती फूल	11
ह़सनैने करीमैन की नाज़ बरदारियां	14
अच्छों की मुशाबहत	18
ख़ातूने जन्नत की सब से बड़ी शहज़ादी	18
ख़ातूने जन्नत की सब से छोटी शहज़ादी	19

अगले हफ़्ते का रिसाला

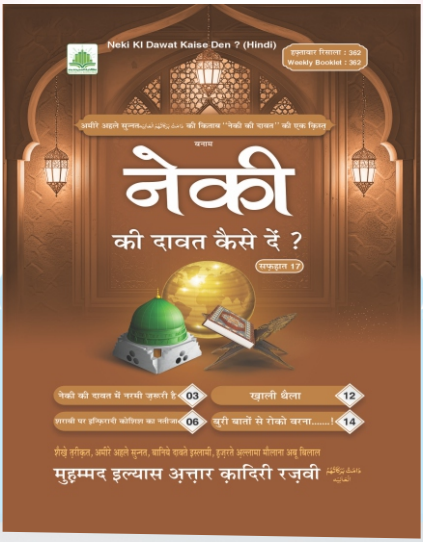

Neki KI Dawat Kaise Den ? (Hindi)
हफ़्तावार रिसाला : 362
Weekly Booklet : 362
अमीरे अहले सुन्नत की किताब ''नेकी की दावत'' की एक क़िस्त
बनाम
नेकी
की दावत कैसे दें ?
सफ़हात 17
नेकी की दावत में नरमी ज़रूरी है 03
शराबी पर इन्फ़िरादी कोशिश का नतीजा 06
ख़ाली थैला 12
बुरी बातों से रोको वरना.......! 14
शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी